

बाबा ने कहा, तुम संगमयुग पर हो, कलियुग की तरफ भी देख सकते हो, सतयुग की तरफ भी देख सकते हो. तुम संगमयुग पर साक्षी हो देखते हो.

क्या हैं साक्षी स्थिति? और कैसे साक्षी हो कर रहा जाये?

पहले अज्ञानता में हमारे सामने कोई भी बड़ी दुर्घटना या प्राकृतिक आपदा होती थी तो हमारा उस तरफ का रिएक्शन कैसा था? ये कैसे हुआ? ऐसा कैसे हो सकता हैं? ये तो गलत हुआ? इसकी या उसकी गलती ढूँढते थे? और कई दिन तक उस बात में ही हमारा काफी व्यर्थ चिंतन भी चलता था.

अब बाबा ने हमें इस बेहद के ड्रामा का सारी सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान दे दिया. तो अब हमारे सामने कुछ भी हो जाये. ज्यादा व्यर्थ प्रश्न नहीं आते हैं, मन शांत रहता हैं और ऐसी परिस्थिति में दूसरों को भी हम शांति देने में मददगार बनते हैं. ये परिवर्तन हमारे में जो आया हैं उसे ही साक्षी-पन की स्थिति कहा जाता हैं.

बाबा ने हमें बताया हैं की ये सारा सृष्टि चक्र एक बेहद का ड्रामा हैं और हम सब आत्माये इसमें पार्टधारी हैं. तो ड्रामा के ऐक्टर को जब ड्रामा के डायरेक्टर ने सारी स्टोरी बता दी हैं तो इसमें पार्ट बजाते सामने कोई भी सीन आती हैं तो उसमें फिर कोई आश्चर्य या प्रश्न नहीं उठ सकते.

यहाँ पर कुछ पॉइन्ट्स नीचे दिये हुए हैं जो बार-बार चिंतन में लाने से हम अपनी साक्षी-पन की स्थिति मजबूत कर सकते हैं.

- इस विश्व रंगमंच पर, ड्रामा के अन्त में, हर आत्मा अपना-अपना कर्म, सुख या दुख भोग कर चुकतू कर रही हैं.

- मुझे संपूर्ण साक्षी (डिटेच औब्जर्वर) हो कर हर सीन को देखना ही हैं.

- किसी की भी परिस्थिति को देख ना मुझे दुखी होना हैं या ना मुझे सुखी होना हैं.

- सर्व के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखनी हैं और साक्षी हो कर इस खेल को देखना हैं.

ॐ शांति.

Pls. provide your feedback / suggestions to Atma Bhai on email – a.brahmin.soul@gmail.com

www.bkdrulhar.com